© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 08 Issue: 04 | 2017 HINDI
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

साहित्यिक हिन्दी के रूप में खड़ी बोली का उद्भव एवं विकास

सुनीता रानी (एच.ई.एस.–II) लैक्चचर हिन्दी (स्कूल कैडर)
मोरनी हिल्ज, पंचकूला (हरियाणा)

ISSN : 2278-6848
03
9 772278 684800
© International Journal for Research Publication and Seminar

खड़ी बोली हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तर प्रदेश के क्षेत्र में बोली जाती है। खड़ी बोली गद्य की सर्वप्रथम रचना अकबर के दरबारी कवि गंग की 'चन्द छन्द बरनन की महिमा' मानी जाती है। तदुपरान्त रामप्रसाद निरंजनी ने 'भाषा योग विशिष्ट'' नामक रचना खड़ी बोली गद्य में लिखी।

खड़ी बोली गद्य के विकास में निम्न चार लेखकों का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

1. मुंशी सदा सुखलाल – सुखसागर
2. इशां अल्लाखां – रानी केतकी की कहानी
3. लल्लूलाल – प्रेम सागर
4. सदल मिश्र – नासिकेतोपाख्यान

सन् 1850 ई. में फोटे विलियम कॉलेज, कलकता की स्थापना हुई जिसमें हिन्दी और उर्द् के अध्यापक के रूप में जान गिलक्राइस्ट की नियुक्ति हुई। लल्लूलाल एवं सदल मिश्र दोनो ही फोर्ट विलियम कॉलेज में थे।

रानी केतकी की कहानी आधुनिक काल में लिखी गई हिन्दी गद्य की पहली मौलिक रचना है, जिसकी भाषा मुहावरेदार, विनोदपूर्ण एवं आनुप्रासिक है।

Note :For Complete paper/article please contact us info@jrps.in

Please don't forget to mention reference number , volume number, issue number, name of the authors and title of the paper